ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
April-June, 2024 : 1(3)78-79
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ सतीश "बब्बा"
पता - डॉ सतीश चन्द्र मिश्र, ग्राम+ पोस्टाफिस= कोबरा, जिला - चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश, पिनकोड - 210208.

Corresponding Author :
डॉ सतीश "बब्बा"
पता - डॉ सतीश चन्द्र मिश्र, ग्राम+ पोस्टाफिस= कोबरा, जिला - चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश, पिनकोड - 210208.

व्यंग्य - "बाल डिजाइन"

एक बार मुझे बाल कटवाने नाई की दुकान जाना पड़ा। वैसे तो मैं अपनी दाढ़ी खुद बना लिया करता था और एक बार मैंने अपने बाल भी काट लिया था। उस मंजर को क्या कहें, सच कहता हूं, मैं जहां भी जाता नई उमर के पांडा, अजी वही नौजवान तो नौजवान, भूतपूर्व नौजवान भी पूछने लगते, "यह डिजाइन किसने बनाया है?"

मैं हैरान - परेशान, अगर यह बता दिया कि, मैंने खुद बनाई है तो, नाई की दुकान से ज्यादा मेरी दुकान चल जाएगी! अब क्या करूं, नौजवान तो क्या मेरी उमर के तत्कालीन जवान जो साठ पार कर चुके हैं, वे भी कोई दोस्ती का वास्ता देगा और कोई उमर का!

वास्तव में मेरे बाल अब तीन तरफ दोनों कान के ऊपर और पीछे बचे हैं। सामने से ऊपर चांद में वही थोड़ी छाया बची है। मैं कई दिनों तक भूमिगत रहा था। और महीनों बाद अब बाल कटवाने के उद्देश्य से नाई की दुकान आया था।

नाई ने नंबर लगा रखा था। एक वही तीस साल के आसपास वाले सज्जन बाल कटवा रहे थे। हमारी जवानी के दिनों में बंगला कट अर्थात पहलवानी कट चलती थी। वह सज्जन अभी ऊपर के, सिर के बालों में नाई को उलझाए हुए थे।

चिड़िया का घोंसला ऊपर बनकर तैयार था। बगल में मशीन चल रही थी। एक तरफ एक लाइन बना दी गई थी। और अभी दूसरी तरफ तीन लाइनें बनानी थी। ऊपर दीवार पर पोस्टर में कई डिजाइन वाले शख्सों की फोटो लगी थी।

मैंने एक बार नाई के अंडर में शीश झुकाए व्यक्ति को देखा और फिर उस पोस्टर को देखा। मशीन रख दी गई थी और कैंची, उस्तरा काम कर रहे थे। कैंची भी ज्यादा खिच खिच की आवाज से परहेज कर रही थी जैसे, नई नवेली दुल्हन आवाज से परहेज करती है।

अब डिजाइन समझ में आने लगी थी। मैं अब भी उस डिजाइन का नाम तो नहीं जान पाया लेकिन उसके ऊपर दो सौ रुपैया लिखा था।

ऊपर किसी तरह से देवी - देवता मनाए क्लीयर हुआ तो अब नीचे दाढ़ी में अगल बगल दाढ़ी के नीचे चोखी दाढ़ी करना था।

क्या बताऊं गजब की माथापच्ची, इतना तो घर के नक्शे को बनाने में समय नहीं लगता है। बालकनी की, पुस्तकों की कवर डिजाइन इन बाल डिजाइनों से कहीं अधिक सरल लगती हैं।

अभी तीन लोग और थे। फिर चौथा नंबर मेरा था। चला गया तो नंबर बढ़ न जाएगा लोग आते जा रहे थे। मैं इसी डर से बैठा रहा।

बहुत देर बाद एक फाइनल हुआ। बालों में पालिश के साथ वह कुछ अजीब सा लगा। अगर उसे लोफड़ कहूं तो आज के युग की तौहीन होगी और क्या पता मेरी ही खबर लेने लगे।

वह फिल्म वाले बादशाह के तरह की एक्टिंग कर रहा था। होंठों पर लाली भी लगी थी उसके! अगर डी जे बजता होता तो वह उसी अंदाज में थिरकने लगता!

वह उठा और खड़ा हुआ; ऐसा लगता था जैसे कोई कार्टून जीवंत खड़ा हो। उसकी मुस्कराहट गजब थी। वह उड़ती नजर उपेक्षा से भरपूर मुझे भी देखा! वह ऐसी डिजाइन बनकर जो इरफान आदि किसी कार्टूनिस्ट का कार्टून लग रहा था और वह बहुत ही खुश नजर आ रहा था; मानो उसके दिल की महबूबा आज जरूर प्रसन्न हो जाएगी!

अब दूसरे सज्जन की बारी थी, वह उठे! ऐसे उतावले जैसे, धनुष यज्ञ में धनुष तोड़ने जा रहे हों! उसने एक फोटो चुनी जिसमें दाढ़ी पैनी थी। जो अच्छे भले मनुष्य को लंगूर बना रही थी। अब अंगूर उनके लिए दूर नहीं थे।

क्या गजब की डिजाइनें चली हैं, एकदम अलग! यह नाई शायद इनका स्पेशलिस्ट था। मेरा मन उथल-पुथल मचा रहा था फिर भी मैं चुपचाप बैठा रहा।

वास्तव में अगर इन पोस्टरों को हमारे खेत की मेंड़ पर खड़ा कर दिया जाए तो, रात में जानवर और दिन में पक्षी भाग जाएं!

मैं उल्टी चालीसा पढ़ने लगा। किसी तरह इनमें से अब मेरे से पहले वाला बिना दाढ़ी का जवान, वही पंद्रह सोलह साल की उमर वाला; उसके सिर्फ रेखा आईं थीं मूछों के नाम पर! वह नाई की कुर्सी पर जम गया। वह भी एक अच्छा घोंसला चिड़ियों वाला चहता था। कुछ नाम बताया था कटिंग का मैं भूल गया या उच्चारण नहीं कर पा रहा हूं!

कई बार की टोका-टाकी के बाद किसी तरह घंटों में वह सज्जन भी निबटा दिए गए।

अब जाके हमारी बारी थी। नाई ने इशारा किया कैसा बना दूं!

मैंने कहा, "भाई जब खेत की मेंड़ पर घास है और बीच में नहीं है तो समझकर बना दो!"

मैं नाई को कैसे समझाऊं कि, 'कभी हम भी जवान थे और हम भी अमित जी की तरह ही हिप्पी कट रखते थे। लेकिन हमें न रेखा मिलीं, न जया! हमें कभी हेमा मालिनी ने देखा तक नहीं, कैसे देखती कभी मिले ही नहीं! फिल्म में तो डायरेक्टर ने उनकी निगाहें पहले से तय कर दी थी; वरना हम कहां इनसे कम थे!'

नाई भी नई उमर का था। उसके बराबरी के हमारे भी बेटे थे लेकिन उसे बेटा कहने पर हमारी तौहीन थी क्योंकि साठ - बासठ कोई उमर नहीं होती हम सीनियर जवान थे। नाई का बाप होता तो हमें समझता क्योंकि वह हमारा हम उम्र था।

उसने हम पर भी खोचकिल अर्थात घोंसला कट आजमाया। हम तो और बड़े कार्टून हो गए। तीनों ओर काली सफेद पट्टी खिचड़ी बाल, मैं खीझा, चिल्लाया और बाल नोचना चाहा।

नाई सकते में था कि, बब्बा को क्या हो गया, यह पगला गया क्या?

आखिर हमने धैर्य से काम चलाया और पूरी फसल साफ करने का आदेश दिया।

अब हम और देखने लायक थे; लाल टमाटर! हम चालीस रुपए वाले थे जिसमें दाढ़ी भी बन जाती।

नाई ने डबल मांगा, किसी तरह से अस्सी की जगह पचहत्तर में बात बनी। खैर पांच बचाकर, पैंतीस गंवा दिए फिर भी खुश थे।

लेखक के लिए इतना पैसा कल्पना होता है वरना इतने की भी आमदनी कहां होती है, फिर भी और क्या कहूं!

• • •